शिव जी की आरती

ॐ जय शिव ओंकारा प्रभु हर शिव ओंकारा ।
ब्रह्मा विष्णु सदा शिव अर्द्धांगी धारा ॥
ॐ जय शिव ओंकारा॥

एकानन चतुरानन पंचानन राजे ।
हंसानन गरुड़ासन वृषवाहन साजे ॥
ॐ जय शिव ओंकारा॥

दो भुज चार चतुर्भुज दसभुज ते सोहे।
तीनों रूप निरखता त्रिभुवन मन मोहे ॥
ॐ जय शिव ओंकारा॥

अक्षमाला बनमाला मुण्डमाला धारी ।
चंदन मृगमद चंदा भोले शुभकारी॥
ॐ जय शिव ओंकारा॥

श्वेताम्बर पीताम्बर बाघम्बर अंगे ।
ब्रम्हादिक सनकादिक भूतादिक संगे ॥
ॐ जय शिव ओंकारा॥

कर मध्येच कमण्डल चक्र त्रिशूलधर्ता ।
जगकरता जगहरता जगपालनरता ॥
ॐ जय शिव ओंकारा॥

ब्रह्मा विष्णु सदाशिव जानत अविवेका ।
प्रणवाक्षर के मध्ये ये तीनों एका ॥
ॐ जय शिव ओंकारा॥

त्रिगुण स्वामीजी की आरती जो कोई जन गावे ।
कहत शिवानन्द स्वामी मनवांछित फल पावे ॥
ॐ जय शिव ओंकारा॥

ॐ जय शिव ओंकारा प्रभु हर शिव ओंकारा ।
ब्रह्मा विष्णु सदाशिव अद्धांगी धारा॥
ॐ जय शिव ओंकारा...॥